## वैयक्तिक स्पष्टीकरण (परिवहन मन्त्री द्वारा)

**परिवहन मंत्री (श्री रणदीप सिंह सुरजेवाला) :** स्पीकर सर, ऑन ए प्वायंट ऑफ पर्सनल एक्सप्लेनेशन। सर, कल जो मैंने बात कही थी ओम प्रकाश चौटाला जी ने उसके बारे में ही जुड़ी हुई बात कही है। मैं कहना चाहता हूं कि अगर ये अभी भी टीका टिप्पणी करेंगे और हमारी बात नहीं सुनेंगे तो यह ठीक नहीं होगा। (शोर एवं व्यवधान) स्पीकर सर, अब ये बात नहीं सुनेंगे। इनको अब हमारी बात भी सुननी चाहिए। इनमें हमारी बात सुनने की हिम्मत होनी चाहिए। अब ये छुपना क्यों चाहते हैं ? अब ये कुल्हड़ी के अंदर क्यों अपना मुंह देकर रोना चाहते हैं ?

**डॉ० सुशील इंदौरा :** स्पीकर सर, अब ये किस तरह बोल रहे हैं ?

**श्री अध्यक्ष :** डॉ० साहब, ये प्वायंट ऑफ पर्सनल एक्सप्लेनेशन पर बोल रहे हैं।

**श्री रणदीप सिंह सुरजेवाला :** स्पीकर सर, मैं पर्सनल एक्सप्लेनेशन पर अपनी बात कहने के लिए खड़ा हूं। मैंने कल जो अपनी बात कहीं थी उसी से इन माननीय सदस्य की बात जुड़ी हुई है। स्पीकर सर, मुझे सदन के कानून के तहत, नियमों के तहत अपनी पर्सनल एक्सप्लेनेशन देने का अधिकार है। स्पीकर सर, मैं यह बात फिर सदन की जानकारी के लिए दोहराना चाहता हूं कि 24 मार्च, 1976 को इंदिरा गांधी ने अवार्ड दिया था जिसके तहत 3.5 मिलियन एकड़ फुट पानी हरियाणा को दिया गया था। उस समय चौधरी देवीलाल जी मुख्यमंत्री नहीं थे। बाद में जब कांग्रेस की सरकार आयी तो उस समय चौधरी देवीलाल जी मुख्यमंत्री थे। प्रकाश सिंह बादल की मदद करने के लिए इधर ये इस पूरे अवार्ड के मामले को न्यायालय में ले गये और उधर बादल साहब इसको न्यायालय में ले गए। जब इनकी सरकारें गयी तो 1981 में इंदिरा गांधी जी ने फिर पंजाब, हरियाणा और राजस्थान को बुलाया क्योंकि वे उस समय देश की प्रधानमंत्री थी और बुलाकर इनका समझौता करवाकर 3.5 मिलियन एकड़ फुट पानी हरियाणा को दिलवाया। उसके बाद जुलाई, 1985 में राजीव लौंगोवाल समझौता हुआ लेकिन इनके मित्र सरदार प्रकाश सिंह बादल ने उस समय मोर्चे लगाकर हमारी यह नहर नहीं बनने दी। इस काम में इनकी भी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों रूप से सहमति थी। जब राजीव लौंगोवाल एकोर्ड में यह प्रावधान किया गया कि इराडो कमीशन का गठन होगा जो हरियाणा के पानी के हकों का निर्धारण करेगा और जब कांग्रेस की सरकार यह केस लड़ रही थी तो उस समय ओम प्रकाश चौटाला और इनकी पार्टी ने इराडी कमीशन को जिसने हरियाणा को उसका हक दिया था, को साईमन कमीशन की संज्ञा दी थी और उसको काले झंडे दिखाये थे। स्पीकर सर, इनको तो उस समय हरियाणा की कांग्रेस सरकार का समर्थन करना चाहिए था और यह कहना चाहिए था कि हम सारे भाई इस मामले में पार्टियों से ऊपर उठकर एक हैं और इस पानी पर हमारा हक है इसलिए आइये हम मिलकर यह पानी लेंगे। लेकिन ये पानी लेने के लिए नहीं गए क्योंकि इनको खतरा था कि अगर हरियाणा को पानी मिल गया तो इनकी वोटों की सस्ती राजनीति किस प्रकार से चलेगी ? स्पीकर सर, इराडी कमीशन ने हरियाणा को 3.5 मिलियन एकड़ फुट पानी दिया था। कल चौटाला साहब ने पहली बार यह बात मानी, चलो अच्छी बात है और मैं इसके लिए इनकी तारीफ भी करता हूं कि पहली बार इन्होंने जिंदगी में यह माना कि 24 मार्च, 1976 का अवार्ड श्रीमती इंदिरा गांधी के द्वारा दिया गया था। कल इन्होंने यह भी स्वीकार किया हालांकि यह इन्होंने बड़े घबराते-घबराते हुए स्वीकार किया कि इन्होंने इराडी कमीशन को काले झंडे दिखाए थे और उसका विरोध किया था। स्पीकर सर, जून 1987 में इनकी सरकार बनी और पहले इनके पिता जी मुख्यमंत्री बने तथा उसके बाद ये मुख्यमंत्री बने। 1991 तक इनका शासन रहा। (विघ्न)

**श्री ओम प्रकाश चौटाला :** अध्यक्ष महोदय, ये क्या है, क्या यह इनका प्वायंट ऑफ आर्डर है ?

**श्री रणदीप सिंह सुरजेवाला :** स्पीकर सर, मैं पर्सनल एक्सप्लेनेशन पर अपनी बात कह रहा हूं। अगर बीच में सदस्य इस प्रकार से विरोध करेंगे तो यह सही नहीं होगा। अगर ये गलत बात बोलेंगे तो इन को सुननी भी पड़ेगी।

**श्री अध्यक्ष :** चौटाला जी आप जवाब दे सकते हैं। आप तो काफी तजुर्बेकार हैं।

**श्री रणदीप सिंह सुरजेवाला :** जब भी इनके ढोल की पोल खुलती है तब-तब इनको तकलीफ होती है। 1987 में इन के पिताजी मुख्यमंत्री बने। बाद में इनको मुख्यमंत्री बनाकर वे उपप्रधानमंत्री बने और श्री वर्मा को पंजाब का गवर्नर लगाया गया। 1987 से लेकर 1991 तक इनकी सरकार थी और इराडी कमीशन का फैसला 1986 में हमारे हक में आ गया था। अगर हरियाणा में इनको एस०वाई०एल० कैनाल का पानी लाना था तो उस समय ला सकते थे क्योंकि उस समय इनके पिता जी दिल्ली में उपप्रधान मंत्री थे, हरियाणा में इनकी सरकार थी और पंजाब में गवर्नर भी इनके थे लेकिन तब ये इसलिए सोये रहे कि कहीं बादल साहब के हितों पर कुठाराघात न हो जाए। 1995 में दोबारा कांग्रेस की सरकार ने इस बारे में मुकदमा दायर किया। ये उस पार्टी के लोग हैं जिन्होंने हमेशा से एस०वाई०एल० कैनाल के नाम पर राजनीतिक रोटियां सेकने का और वोट बटोरने का काम किया है। इनके हाथ तो किसानों के खून से रंगे हुए हैं। सर, आप रिकार्ड निकलवा कर दिखाइए, खुद चौटाला साहब ने माना है।